तृतीय अध्याय

बच्चन की आत्मकथा प्रथम खण्ड "क्या भूलूं क्या याद करूं"

3.1 क्या भूलूं क्या याद करूं आत्मकथा में उनका व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन

3.2 आत्मकथा में चित्रित उनका वंश – परिचय

3.3 बच्चन जी की काव्य प्रतिभा

3.4 आत्मकथा साहित्य में बच्चन की मानवीय संवेदना एवं जीवन मूल्य

3.5 बच्चन जी की भाषा का मूल्यांकन

बच्चन जी की आत्मकथा में पूर्वजों के वंशवृक्ष और जातीय कथाओं के ब्यौरे पाश्चात्य आत्मकथाओं की एक प्रकृति है।

डॉ0 कमलेश सिंह

3.1 क्या भूलूं क्या याद करूँ' आत्मकथा का प्रथम अंश : उनका व्यक्तित्व एवं जीवन–दर्शन।

डा0 हरिवंश राय 'बच्चन' साहित्य के युग–पुरूष तो थे ही, एक श्रेष्ठ आत्मकथाकार भी थे। बच्चन द्वारा लिखित 'क्या भूलूं क्या याद करूँ' विवेकपूर्वक, योजनाबद्ध रीति से लिखा गया प्रथम आत्मकथा खण्ड है। 'क्या भूलूं क्या याद करूं' आत्मकथा खण्ड उनकी पूरी योजना का एक तिहाई भाग है।

इस खण्ड में लेखक ने अपने यौवन ज्वार के क्षणों का व्यापक वर्णन इस विशदता से किया है कि उनके साहस और सत्यकथन की प्रशंसा करनी पड़ती है। डा0 'बच्चन' ने अपने मन–मस्तिष्क पर अंकित होने वाले बचपन और युवावस्था के संस्कारों–के साथ–साथ पूर्वजन्म के संस्कारों के बल पर आत्मतत्व का भी यथेष्ट संकेत अनेक स्थलों पर दिया है।

'क्या भूलूं क्या याद करूँ' की रचना 1963 से 1969 तक हुई जिसमें लेखक ने अपने कायस्थ जातिवर्ण के नाम, उद्भव विकास, और महत्व पर विस्तृत चर्चा करते हुए अपने अमोढ़ा वंश, की सात–पीढ़ियों की कथा विस्तार से लिखी है। 'बच्चन' ने इसमें अपने जन्म, शैशव, शिक्षा के अभ्यास, गृह परिवार, परिवेश, आदि का वर्णन करते हुए स्कूल कालेज के मित्रों एवं गुरूजनों से बच्चन के सम्बन्धों और सम्पकों की विस्तृत जानकारी प्रदान की है। इसी खण्ड में लेखक के शैशव काल एवं यौवनारम्भ के प्रणय और भावुकता के विशिष्ट क्षणों

एवं गुणों का वर्णन किया है। जिससे उनका उदात्र धीर गम्भीर व्यक्तित्व उभरकर सामने आया हैं।

प्रत्येंक मनुष्य के दो रूप होते है एक व्यक्त और दूसरा अव्यक्त। उसका आकार–प्रकार, आचार–विचार, अर्थात् जिसमें उसकी कर्मोन्द्रियों एवं समस्त ज्ञानेन्द्रियों की क्रियायें व्यक्त होती है। हरिवंश राय 'बच्चन' ने अपने चारों आत्मकथा खण्डों में अपने सम्पूर्ण जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व को विविध कोणों से व्याख्ययित करने का प्रयास किया है। उन्होंने आत्मकथा विधा को नया संस्कार और नया धरातल ही नहीं दिया अपितु उसे एक नई चेतना–भूमि, नव–सामाजिकता और नव–चितंनधारा भी दी। उन्होंने जीवन की समग्र अनुभूति, अनुभवों तथा अपने सुख–दुखों को जीवंत रूप दिया। उनके द्वारा स्थापित साहित्यिक मान्यताएँ अधिक सटीक और जीवन के लिए उपयोगी है क्योंकि इनमें गूढ़ चितन के साथ साहित्यिक जीवन के सभी पहलुओं का दिग्दर्शन मिलता है।

बच्चन की आत्मकथा 'क्या भूलूं क्या याद करूँ' में साहित्यिक जीवन से संघर्ष करने वाले जुझारू लोगों के लिए अनुकरणीय है। उनकी आत्मकथा 'क्या भूलूं क्या याद करूँ' बच्चन के विराट व्यक्तित्व पर ही प्रकाश नहीं डालती अपितु उनके जीवन के एक–एक परत को बड़ी नज़ाकत–नफ़ासत से उधाडती चलती है। जिससे उनका जुझारू, संघर्षशील एवं संवेदनाशील विशाल व्यक्तित्व स्वतः प्रस्फुटित होकर सामने आ गया है।

3.1.2 संघर्षशील व्यक्तित्वः–

डा0 बच्चन का व्यक्तित्व एक गतिशील मानव का व्यक्तित्व था, जिसने परिस्थितियों के अनुसार नव–नव रूप धारण किया, वे हिन्दी की महान् विभूति थे। उनका सहृदय व्यक्तित्व, जागरूक चितन,तथा सर्जनाशील साहित्य हिन्दी साहित्य की अक्षय मंजूषा है।

बच्चन का नाम प्रथम श्रेणी के कलाकारों के 'अन्तर्गत' लिया जाता था। समय की प्रखर धारा ने बच्चन को हर कोण से तेजतर्रार और अकेले बहुत कर सकने की क्षमता से भरपूर बना दिया था। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दूध–पानी की तरह घुले–मिले है।

बच्चन का मझला कद, गेहुँआ रंग, तनें अंग, धबराले उठे–उठे से बाल, दर्पण–सा माथा, ऐनक के अन्दर चमचमाती, छोटी मछलियों–सी आँखे, चिकना–चेहरा, खुशनुमा होठ,''[1] किसी को भी अपनी ओर आकृष्ट किये बिना नहीं रहते थे। उनके दुर्बल–तन में एक सबल, झाँकता, हुआ मन सहज ही दृष्टिगोचर होने लगता है।

''जैसे–गौरेया एक–एक तिनका चोंच में लगाकर एक–सुन्दर सा धोंसला बना लेती है, वैसे ही उन्होंने एक–एक काम जोड़कर अपने व्यक्तित्व और उसके चारो ओर के वातावरण का निर्माण किया''[2]

बच्चन के व्यक्तित्व में 'मीरा की दीवानगी, 'बिहारी की लोक–प्रियता', 'घनानन्द की प्रेम की पीर', भूषण का ओज, 'गुप्त' की सहजता, 'प्रसाद' का सामंजस्य और 'महादेवी' से अधिक गेयता और विरहानुभूति पायी जाती है।

बच्चन बेहद संवेदनशील एंव धैर्यवान थे उनका धैर्य अटूट था, तैलधारावत उनका अंतः विश्वास''[3] बच्चन दुःख से परेशान होकर कभी नहीं हारे।

3.1.2 अछूतोद्वार एवं बहिष्कृत :–

'चमारिन माँ' के लाडले बच्चन ने इलाहाबाद के आर्य समाज में आयोजित प्रीतिभोज में अछूतों की पंगत में बैठकर कच्चा खाना खाया।''[4] मुहल्ले की रवत्रानी कन्या खिल्लों की शादी के समय हिन्दुओं की छूआछूत नीति एवं सामाजिक कूर–निर्मम रूढ़ियों''[5] से द्रवित होकर बच्चन ने बहिष्कृत–कायस्थ–परिवार में' स्वयं भोजन करे'[6] उनको समाज में पुनः स्थापित करवाया। बहिष्कृत और अछूतों के परिवार के साथ खाने–पीने के कारण उनके परिवार के सदस्यों और निकट सम्बन्धियों ने 'शालिग्राम' के गौने के समय बहुभोज का बहिष्कार किया।

विजातीय, विधर्मी और विभाषी 'तेजी' को अपनाकर बच्चन अपनी जाति खो चुके थे। 'बच्चन' को हिन्दू–समाज का समस्त ढाँचा रूग्ण और सड़ा–गला सा प्रतीत होता था। छूआछूत तथा विभेद की भावना देशकी उन्नति में घातक प्रतीत होती थी।

''मानव का मानव से लेकिन अलग न उतर प्राण''[7]

मिट्टी के द्रोणाचार्य कविता[8] में भी उन्होंने छूआछूत की भावना पर प्रकाश डाला है। ''बच्चन जी' ने अपने घर में प्रायः चमार बावर्ची रखते थे।''[9]

3.1.3 विनोदवृन्तिः–

बच्चन का मन पढ़ने–लिखने में नहीं लगता था। वह जानबूझकर कलम की नोक तोड़ देते थे, क्योकि वह जानते थे उनकी माँ सुरसती को कलम की नोक निकालनी नहीं आती है।, जिसके फलस्वरूप उन्हे पढ़ने से छुट्टी मिल जाती थी। 'माँ सुरसती, जब मंगलवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करती, तो बच्चन अधिक प्रसाद पाने के लिए कहते– 'सुनहू मातु मोंहि अतिसय भूखा' और माँ एक–दो लड्डू और अधिक दे देती। तेजी' से विवाह के अवसर पर उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वह सभी प्रकार से सुन्दर है परन्तु कानी है उसके पिताजी ने काँच की आँख लगवा दी है। जब माँ सुरसती ने प्यार और सहानुभूति और विश्वास में लेकर आँख के विषय में पूछा तब तेजी ने उत्तेजित होकर कहा–कि मेरी दोनों आँखें ठीक हैं।[10] 'बच्चन' का विनोद तीखा या पैना न होकर सहृदयता से भरा होता था।

3.1.4 क्रीड़ा व खेलकूदः–

बचपन में 'बच्चन' का मन पढ़ने–लिखने से हटकर खेलकूद की ओर लगाया गया परन्तु खेलकूद में भी उनका मन पूरी तरह से रमा नहीं, धीरे–धीरे खेलकूद से वह पूरी तरह दूर चले गए। बस कभी–कभी वह काम से थककर हाथ में छड़ी लेकर एक–दो मील धूम आते थे किन्तु मन काम में ही रमा रहता। 'बच्चन' ने अपनी आत्मकथा में लिखा है।

जो वृद्धावस्था में भी खेल सकते है गाल्फ,

चाहे लाश, मुझे उन सबसे ईर्ष्या है।''[11]

3.1.5 प्रकृति प्रेमः–

बच्चन जन्म से ही शहर मे रहे, घूमे–फिरे, इसलिए प्रकृति–प्रेम के संस्कार उनमें जागे नहीं। बच्चन ने पाया कि उपर आसमान है जहाँ रात में तारे निकलते हैं उसी में कहीं बादल छा जाते है। सूर्योदय और सूर्यास्त मेरे मकान के पीछे से होता है।''[12] यद्यपि वह किसी स्थान के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकंर आकर्षित नहीं हुए और ना उसे देखने गए परन्तु फिर भी वे सौन्दर्य–बोध से अपरिचित नहीं थे। 'बच्चन' की अपनी आत्मकथा में प्रकृति चित्रण मिलता है। ''विदेशों में देखा है जहाँ प्रकृति को मनुष्य का स्पर्श मिला तो वह और अधिक सुन्दर हो गई, हम प्रकृति के समीप आकर उसे अशोभन, अनाकर्षक, कुरूप बना देते है।''[13]

वे कहते थे कि भारत में चित्रकूट की गुप्त गोदावरी को यदि मनुष्य के स्पर्श द्वारा शोभनीय बनाया जाए तो कितना अच्छा हो।''[14]

3.1.6 मानसिक अन्तर्द्वन्द्व :–

''मैट्रिकुलेशन–परीक्षा में असफल, कर्कल, चम्पा की स्मृति में निसंज्ञ, आत्महत्या विचार से नहीं किन्तु मृत से ही यमुना किनारे गए, सद्भाग्य से एक अपरिचित अध्यापक एडम्स की सहानुभूति ने बच्चन को जीवन के प्रति आशावान बना दिया और संघर्ष करने की प्रेरणा दी।''[15]

बरेली कवि–सम्मेलन से लौटते समय 'मधुशाला' के प्रशंसक नवयुवक की आत्महत्या से द्रवित होकर, कभी भी कविता न लिखने का निश्चय किया।''[16] इंग्लैंड–प्रवास के दौरन तीसरे बिन्दू ने आकर उनके जीवन में बहुत बड़ा व्याधात उपस्थित कर दिया था।''[17] परन्तु दोनों के विश्वास एवं समझदारी से सुखी नीड़ भग्न होने से बच गया।

3.1.7 स्वभावः–

बचपन मे चौथी कक्षा के बच्चन को उनके पिता हिन्दी लेने से रोक न सके। 'बच्चन को तो बहता हुआ पानी और उठती हुई आग देखना बहुत भाता था। पानी चाहे नाली का हो, चाहे नदी का, आग चाहे होली की हो चाहे चिता की, श्यामा के मृत्यु के बाद उसके कपड़े व सामान आदि जलाने के लिए उनकी माता व बहनें दबी जवान से मना करती तो वह सुनते सबकी, करते अपने मन की।''[18]

कब भला संसार से डरता रहा मैं
मौज में आया वही करता रहा मैं''[19]

अखड़ स्वभाव वाले 'बच्चन' टूट तो सकते थे परन्तु झुक नहीं सकते थे। बच्चन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि कभी उन्होंने अपने व्यक्तित्व को बढ़ा–चढ़ा कर नहीं देखा, बल्कि उन्होंने विनम्रतावश घटाकर देखा। आधुनिक प्रचारवादी युग में यह बहुत बड़ी मिसाल है।''[20]

आड़े वक्त में दूसरे के काम आना बच्चन की प्रकृति थी, आर्थिक संकट में 'श्रीकृष्ण, शमशेर; जीवनप्रकाश जोशी', को सहायता देते तो

'नरेन्द्र' और 'पंत जी' को सहयोग भी। ''जोखिम में जीना या जीवन जोखों के साथ जीना बच्चन के लिए मनोरंजन की सामग्री थी।''[21]

3.1.8 आराधनात्मक प्रकृतिः–

'बच्चन' को 'रामचरित्र मानस' अत्यधिक प्रिय और पूज्य थी। प्रति चैत्र की नवरात्रि में वह मानस का पूर्ण पाठ करते थे।''[22] 'बच्चन' के अखंड–मानस–पाठ से 'सियारामशरण' गुप्त' को प्रसन्नता थी बच्चन 'रिद' नास्तिक अथवा 'अनास्थावान' नहीं थे।''[23]

बच्चन का धर्म–सम्बन्धी विश्वास भी एक अनन्य वैशिष्टय को परिचायक था। प्रेम ही उनका धर्म और भगवान था।

धर्म हमारा पूछो प्राण?
ईश्वर को मैं नहीं जानता,
उसकी सत्ता नहीं मानता,
जिसे न देखा जाना, कैसे उसको लेता मान,
जगती मैं अब तक, प्राण।

3.1.9 दाम्पत्य जीवन में पत्नियों के प्रति संवेदनशीलताः–

बच्चन का प्रथम विवाह मई 1926 में सिरायू तहसीलके रूपनारायणपुर गाँव के निवासी, इलाहाबाद हाईकोर्ट में अनुवादक 'श्री बाबू रामकिशोर' की पंद्रह वर्षीय बड़ी पुत्री 'श्यामा देवी' के साथ सम्पन्न हुआ।''[24] बच्चन को उस समय वह स्काई–लार्क लगी''[25] परिणामतः बच्चन ने उसे अपने खेल की सहेली बनाया। विवाह के तीन वर्षों के बाद 'बच्चन' ज्वरग्रस्त श्यामा का गौना करा लायें। उनको उस

वक्त श्यामा की चारपाई अपने कमरे में लगवाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। 'श्यामा' की चारपाई को अपनी चारपाई से मिलाकर 'बच्चन' ने अनुभव किया कि मानों दोनों के शरीर मिल गए हों।

बच्चन ने अपनी पत्नी का यह एकान्त–मिलन इन शब्दों में व्यक्त किया। ''नीद तो मुझे नहीं आ रही थी, न उसें ही, पर मैंने सोचा मैं सोऊँगा तो वह भी सो जाएगी। मुझे याद है कि मैंने उसके बालों की एक लट अपनी ऊँगुली पर लपेट ली और आँखे मूंद ली पर न श्यामा सो सकी न मैं सो रहा था।''[26]

दो सौ सोलह दिन रोग श्य्या पर पड़े रहने के बाद 17 नवम्बर 1926 को श्यामा ने अपना शरीर छोड़ दिया। श्यामा सही अर्थों में बच्चन की अर्धांगिनी थी उनकी मृत्यु से बच्चन भी अधमरे हो गये थे।

3.1.10 द्वितीय विवाहः बच्चन का सुखी दाम्पत्य जीवन एकबार फिर सेः–

अकेले और क्षीणकाय बच्चन को 'आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने द्वितीय विवाह करने की सलाह दी, तुम घर–परिवार बसाकर ही शांत और सुखी रह सकोगे, तुम फिर से विवाह कर लों।

परिणामतः 24 जनवरी 1942 को मरिपुर–खास के सरदारजी की चौथी पुत्री और सबसे छोटी पुत्री 'तेजी' से बच्चन का विवाह सम्पन्न हो गया। 'सुरसती' ने 'तेजी' को राम–सीता विवाह प्रसंग सुनाकर 'बच्चन' जी से मांग में सिन्दूर भरवाया। 'भगवती बाबू' दैवयोग से उस समय कलक्त्ते आ गये उन्होंने आगे बढ़कर दोनों को आशीर्वाद दिया।

दैवयोग से ही वह अमिताभ की शादी पर बम्बई में मौजूद थे, और बरात में भी शामिल हुए थे।''[28]

'तेजी' के आगमन से माँ की ममता, सहचरी की सद्भावना का अनुभव कर बच्चन सुखी सम्पन्न हुए, इनके दो पुत्र अमित और अजिताभ हुए। 'बच्चन' का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति की विशेषताओं से सम्पन्न कतिपय वैयक्तिक गुणों से मंडित था। वे देश की सांस्कृतिक परम्परा के उत्कर्षाभिमुख प्रतिनिधि है, जो सौष्ठव और आभा से दैदीप्यमान है।

अतः बच्चन के जीवन में जो भी साधारण–असाधारण घटनाचक्र घटित हुआ उसने ही उनको असाधारण, अद्वितीय संघर्षशील व्यक्तित्व प्रदान किया। बच्चन के जीवन में आयी उनकी दोनों पत्नियों का उनके व्यक्तित्व निर्माण में निश्चित रूप से योगदान रहा।

3.2 आत्मकथा में चित्रित उनका वंश–परिचयः–

अपने कुल, परिवार, वंश, जाति, वर्ण आदि के गौरव को अक्षुण रखना तथा आत्मोन्नति की प्रेरणास्वरूप अपने पूर्वजों के गुण–गरिमा का स्मरण करना जहाँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानवीय व्यक्तित्व के निर्माण के लिए उपयोगी है, वहीं यह समाजशास्त्रीय परम्परा के लिए भी आवश्यक है।

हिन्दी के 'ख्यातनामा लेखक अनेक साहित्यिक सम्मानों से अलंकृत तथा उच्चतम सरस्वती पुरस्कार से समादृत बच्चन ने वंशगौरव तथा जातिभिमान को अत्यन्त कलात्मक, एवंम रोमांचक शैली से प्रस्तुत

करते हुए उसे सुरूचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया है। बच्चन की आत्मकथा का यह अंश श्रेष्ठ गद्य का प्रमाण है जिसमें बच्चन ने अपने वंश परम्परा और व्यक्तित्व को अनेक एवं आयामों से देखा परखा है।

'बच्चन के वंश का उत्स दो–ढाई सौ साल पूर्व उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अमोढ़ा' से प्राप्त होता है। अमोढ़ा के पाँडेय उपजाति के एक ब्राह्मण ने कृतज्ञता प्रकाशन हेतु डोमा राजा जगत सिंह को पाँडेय आस्पद प्रदान कर अपनी कन्या समर्पित की इसलिए उक्त राजा के वशंज अमोढ़ा के 'पाँडेय' कहलाए। 'अमोढ़ा किसी समय छोटा–मोटा ग्राम न होकर पूरा जनपद था, जिसमें सैकड़ों ग्राम थे।[29]

बस्ती, हरदोई, लखनऊ, गोंड़ा, बहराइच, सीतापुर, सुल्तानपुर, फैजाबाद, परताबगढ़ और इलाहाबाद में श्रीवास्तव कायस्थों के बहुत से परिवार ऐसे हैं, जो अपने को 'अमोढ़ा के पाँडे कहते है या अपने को अल्ल 'पाँडे' अमोढ़ा' कहलाते है।''[30] 'बच्चन के पूर्वज अमोढ़ा के कायस्थ थे, जो अपने आचार–विचार के कारण 'अमोढ़ा' के 'पाँडे' कहलाये।''[31]

मैं कायस्थ कुलोद्भव, मेरे
पुरखों ने इतना ढाला,
मेरे तन के लोहू में है,
पचहत्तर प्रतिशत हाला''[32]

बच्चन ने बचपन में सुना था कि कायस्थ आधा मुसलमान होता है। भारतीय पुनर्जागरण के साथ, विद्याबुद्धि के प्रत्येंक क्षेत्र में प्रतिभा

डॉ0 हरिवंश राय बच्चन दोस्तों और रिस्तेदारों के साथ

का सबूत देने पर कायस्थों को अपनी शुद्धवत् स्थिति खलने लगी इसलिए कुछ लोगों ने नाम के आगे 'सिंह' लगाना शुरू किया, और कुछ ने 'वर्मा' बच्चन ने भी विद्यार्थी जीवन में अपने नाम के आगे 'वर्मा' लगाया'' किन्तु सौभाग्य से वह जाति–उपजाति का भेद भाव जल्दी समझ गए और 'वर्मा' लगाना छोड़ दिया।

बच्चन की स्मृति में मनसाराम प्रथम व्यक्ति थे जिन्हें रामानंद सम्प्रदाय की गद्दी के आचार्य गुरू ने उन्हें तीन पुत्रों का वरदान और तीन बर्तन–एक बटलोई, एक थाली, एक गिलास, तीन रूपये नकद भी ऋण के रूप में दिए और कहा 'जब तक ये बर्तन तुम्हारे पास रहेगे तब तक तुम्हारा कुटुम्ब अन्न कष्ट नहीं भोगेगा''[33] गुरू जी के वरदानानुसार तीन पुत्र हुए और तीन पीड़ियों तक सम्मिलित कुटुम्ब में रहे। चौथी पीढ़ी में तीनों अक्षय प्राप्त तीनों परिवारों में बैठ गये। बड़े घर में थाली, मझले घर में बटलोई और छोटे घर में गिलास गया। ''इन बर्तनों की चमत्कारी शक्ति में बराबर विश्वास किया जाता रहा।''[34]

3.2.1 बड़ा घर:–

मनसाराम की छठी पीढ़ी में, बड़े घर में चार भाई–जगन्नाथ प्रसाद, मुरलीधर, मोहनलाल और गणेश प्रसाद हुए। जगन्नाथ प्रसाद के पुत्र शिवप्रसाद के पुत्र का नाम कृष्ण मुरारी है।'' मोहनलाल के एक पुत्र ठाकुर प्रसाद एम0 ए0 के दो पुत्र श्यामा प्रकाश और भानु प्रकाश हुए।

3.2.2 मझाला घरः–

मनसाराम की चौथी पीढ़ी में मिट्ठुलाल बच्चन के परबाबा थे छह फूटे जवान, इस्पाती शरीर वाले, कसरत, लाठी तलवार, धुड़सवारी एवं बाज के शौकीन किन्तु स्वभाव से क्रोधी थे इसलिए लोग उन्हें 'जाबिर बौर जल्लाद भी कहते थ।''[35] वह राजसी प्रकृति के एवं व्यसनी आनन्दवादी थे परिणामतः चौक के दो चार कोठे समृद्ध थे। अक्खड़ स्वभाव के कारण मृत्यु शैया पर गोदान न कर धोड़ा दान ही किया। ''बच्चन के परबाबा कंपनी सरकार में शहर के नायब कोतवाल थे। उन्होंने काफी धन कमाया और किले जैसा बड़ा मकान बनवाया था।''[36] बच्चन के अनुसार जो कद–काठी आज अमित की है और उनका बंगला 'प्रतीक्षा' वह सब उनके परबाबा मिट्ठूलाल से मिलता है। बच्चन बचपन में अपने परबाबा के विषय में सुनते–सुनते सोचते कि *वह भी* आत्मविश्वस्त और निर्भीक होकर जीयेंगे और आनंद से विचरूंगा।''[37]

''शिवाजी के परमोपासक होने के कारण उन्होंने पुत्र का नाम 'भोलानाथ' और पुत्री का नाम 'भवानी' रखा। बच्चन पर बचपन में पड़े परबाब के संस्कारों के प्रभाव के कारण बच्चन 'ब्रिटिश यूनिटों, से सम्बद्ध होकर आधुनिक हथियारों को चलाना सीख गए–

''मैं कलम और बन्दूक चलता हूँ दोनो''

मिट्ठूलाल के दूर्दम्य, दुर्द्धर्ष, और आक्रातकारी व्यक्तित्व के नीचे भोलानाथ का व्यक्तित्व पूरी तरह न उभर सका। वे कद से मझोले और शरीर से पृष्ट थे–

बाबा लौह पूरूष थे, भावों
में, पर, वह जाते थे अक्सर
दादी कोमल थी पर आँखे
द्रढ़ रखती थी वस्तुस्थिति पर''[38]

उन्हें पढ़ने–लिखने का शौक था। उन्होंने अरबी, फारसी, और उर्दू की शिक्षा प्राप्त की थी। रामचरित्रमानस का सुन्दरकाण्ड उर्दू अक्षरों में लिखा था। गदर के समय उनके पाँव पर ठोस लोहे का, सवा सेर का गोला पड़ा था। बच्चन ने इस घटना पर लिखा–

मैं हूँ उनका पौत्र, पड़ा था जिनके पाँव गदर का गोला।''[39]

ललितपुर नौकरी के लिए जाते समय रास्ते में उन्होंने भुईया रानी के तालाब के किनारे देवी पूजा–अर्चना की–

पूजा करते समय वही पर, बामअंग दादी का फरक मन्नत मानी सात चुनर की, जो घर में खेलेगा लड़का।''[40] इसके ठीक दसवें महीने में ललितपुर में उन्हें प्रतापनारायण पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। स्वयं बच्चन के मन में ललितपुर जाने की स्मृति इतने गहरे बैठी थी कि बच्चन केम्ब्रिज से लौटकर संयोगवंश ललितपुर गये।

''ललितपुर को नमस्कार है जहाँ पिता जन्में थे मेरे।''[41]

प्रतापनारायण के दो पुत्र हुए हरिवंशराय और शालिग्राम। हरिवंशराय के दो पुत्र अमिताभ और अजिताभ तथा शालिग्राम के एक पुत्र 'प्रभात हुए।

3.2.3 छोटा घरः–

मनसाराम की छठी पीढ़ी में, छोटे घर में छेदीलाल और शारदा प्रसाद हुए। शारदा प्रसाद के तीन पुत्र, जगत नारायण रामचन्द्र और काशी प्रसाद हुए इस प्रकार से मनसा की सातवी पीढ़ी में शिवप्रसाद ठाकुर प्रसाद, हरिवंशराय, शालिग्राम, जगतनारायण, रामचन्द्र और काशी प्रसाद कुल सात पुत्र हुए।

बच्चन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उनके वंश के प्रति राधा की एक च्योरी थी कि हमारे परिवार के लड़के उनपर न जाकर अपने पितामह पर जाते है, वे मानते थे कि कहीं न कहीं इस बात में सच्चाई अवश्य है। मेरे परबाबा छह फुटे जवान थे। मेरे पिता फिर लंबे, छह फुट से ऊपर ही थे। मै साढ़े पाँच के ऊपर नहीं जा सका और मेरा बड़ा लड़का कालिदास तो नहीं, व्यास के दुष्यंत पुत्र सर्वदमन के समान बारह की अवस्था में तो नहीं पर पन्द्रह–सोलह की उम्र मे ही 'शालस्तभ इवोद् गतः छह फुट से उपर निकल गया था।

बच्चन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि "अपने पारिवारिक जीवन में मुझे कई बार अनुभव हुआ, जैंसे हमारे पिताजी की आत्मा हमारे बीच सक्रिय है।"[42]

अतः यह आत्मकथा खण्ड बच्चन के विराट परिवार पर प्रकाश ही नही डालता अपितु बच्चन के एक मूलाधार वंश,परम्परा उनके प्रारम्भिक जीवन की एक–एक परत और एक–एक आयाम को अत्यन्त कलात्मकता और ईमानदारी के साथ उधाड़ कर रख देता है।

बच्चन सहज और सरल जीवन शैली, 'सादा जीवन–उच्च विचार' के समर्थक रहे।

'क्या भूलूं क्या याद करूं' के आधार पर निर्मित बच्चन का वंशवृक्ष
अमोढ़ा के पाण्डे (श्रीवास्तव कायस्थ)

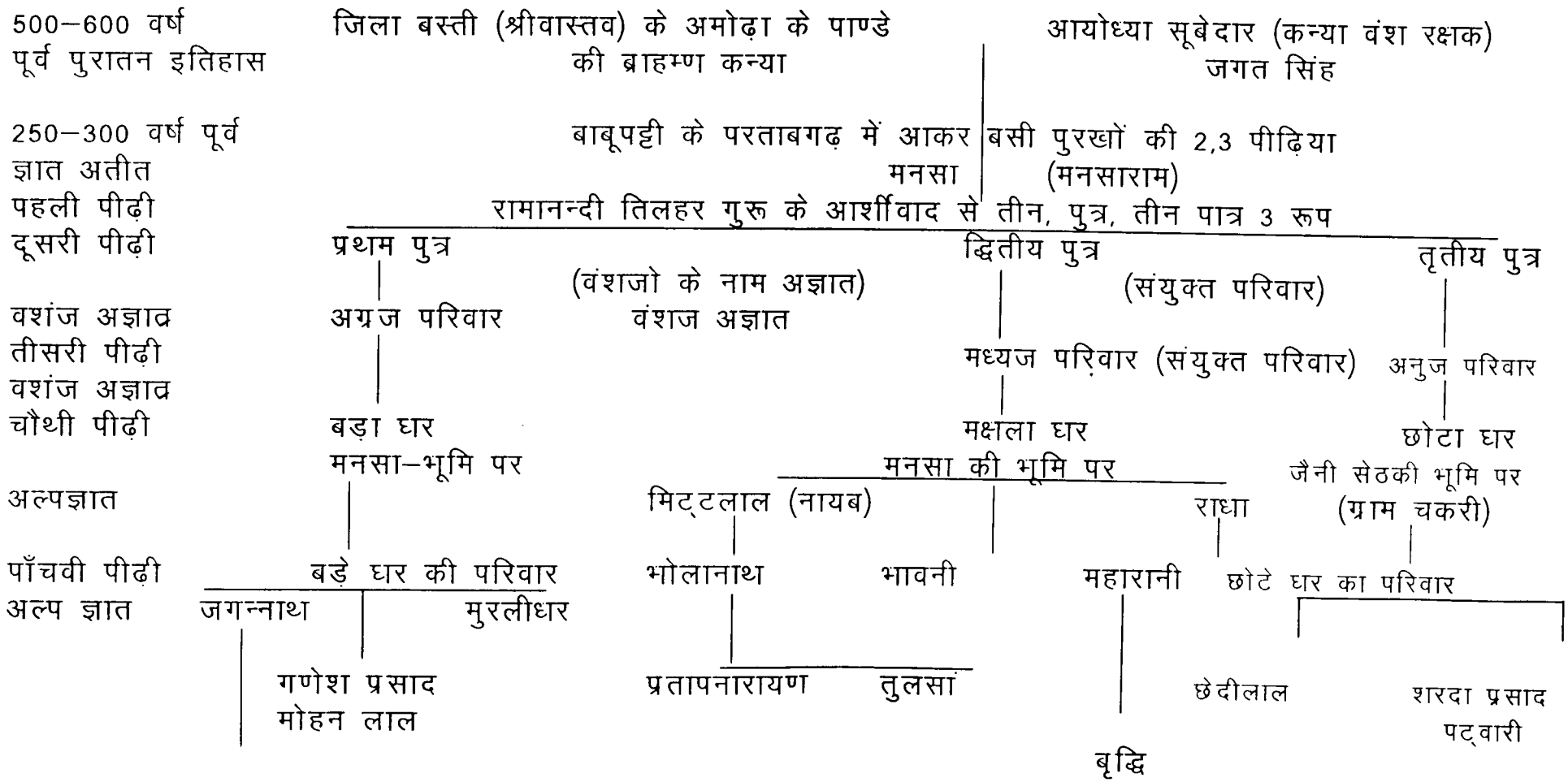

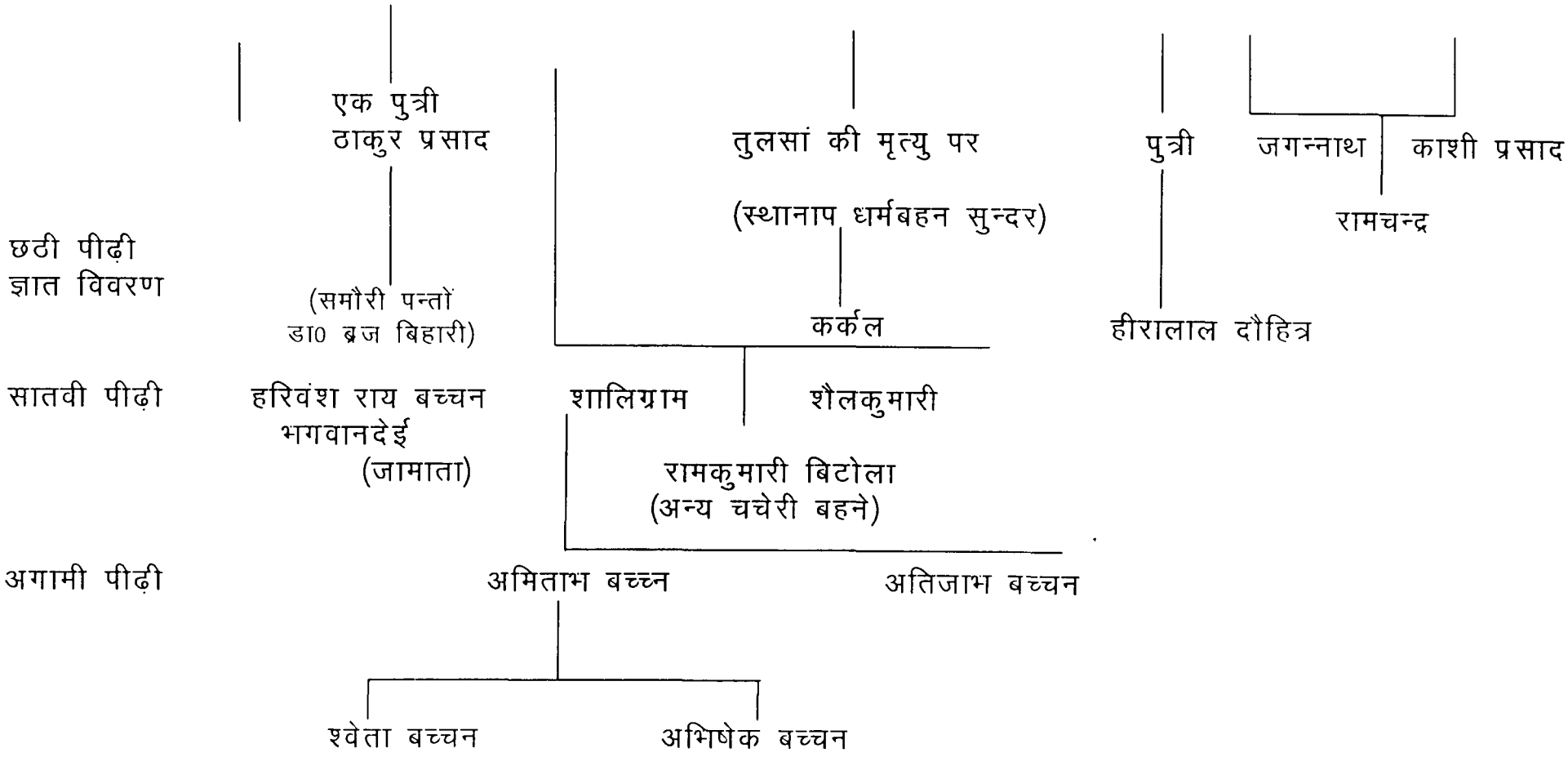
एक पुत्री
ठाकुर प्रसाद
तुलसां की मृत्यु पर
(स्थानाप धर्मबहन सुन्दर)
पुत्री
जगन्नाथ
काशी प्रसाद
रामचन्द्र
छठी पीढ़ी
ज्ञात विवरण
(समौरी पन्तों
डा0 ब्रज बिहारी)
कर्कल
हीरालाल दौहित्र
सातवी पीढ़ी
हरिवंश राय बच्चन
भगवानदेई
(जामाता)
शालिग्राम
शैलकुमारी
रामकुमारी बिटोला
(अन्य चचेरी बहने)
अगामी पीढ़ी
अमिताभ बच्चन
अतिजाभ बच्चन
श्वेता बच्चन
अभिषेक बच्चन

3.3 बच्चन की काव्य–प्रतिभा :–

कवि के रूप में बच्चन का एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है जिसके बिना हिन्दी कविता का भी इतिहास अधूरा है। बच्चन और उनका काव्य हिन्दी काव्येतिहास का एक स्वतंत्र और गौरवशाली अध्याय है। 'बच्चन ने जीवन–यथार्थ को ईमानदारी से गाया और वह बहुसंख्य पाठकों के बीच लोकप्रिय हो गए।

बच्चन ने अपने बाबा से पाई भावुक्ता और कल्पना प्रवणता के फलस्वरूप सन् 1920 में कायस्थ पाठशाला की सातवी कक्षा के विद्यार्थी बच्चन अपने किसी अध्यापक के विदाभिनंदन पर एक कविता लिख डाली। पाठशाला के अध्यापक श्री विश्राम तिवारी की प्रेरणानुसार वे निबंध के अंत में विषय से सम्बद्व दोहा न होने पर, स्वयं रचकर लिखा करते थे उन्हीं दोहो से उनके काव्य का उद्‌गम हुआ था।[43]

चौदह–पन्द्रह की उम्र में उन्हें छन्द ज्ञान और माला का ज्ञान नही था। कविता लिखने की तीव्र इच्छा में 'कभी आधा पेज' गणित की कापी से फड़ा, कभी एक पेज इमला की कापी से फाड़ा। कभी कागज छोटा फाड़ा तो कभी बड़ा''[44] उस समय बच्चन की कविताओं का आकार–प्रकार कागज के आकार–प्रकार पर निर्भर करता था। नवी–दसवी कक्षाओं तक आते–आते बच्चन ने एक कापी भर डाली थी। एक बार एक साथी ने उन्हें चोरी से ऐसा करते हुए देख लिया''[45] तो उन्होंने गुस्से में आकर पूरी कापी के टुकडे–टुकडे कर डाले।

''प्रारंभ में बच्चन अपनी कविताओं को पूर्णतः निजी बनाकर रखते थे, किन्तु बाद में वह कुछ खास–खास दोस्तों को सुनाने लगे। बच्चन के दोस्त श्री आनंदी प्रसाद श्रीवास्तव''[46] और ठाकुर विक्रमादित्य सिंह भी बच्चन को कविता लिखने के लिए प्रेरित करते थे। सन् 1933 में एक कवि सम्मेलन में देहाती कवि की भूमिका निभाने के लिए कविन्त और एक लोकगीत उन्होंने स्वयं रचा था ''आगे चलकर बच्चन में कवि होने का विश्वास श्यामा ने दृढ़ किया था और उसका समर्थक श्रीकृष्ण ने भी किया''[47] ''बच्चन स्वान्तः सुखाय''[48] ''अपना सुख–दुख कागज पर कहने लगे थे''[49]

बच्चन स्वीकारते हैं कि मेरी कविता मेरे जीवन की स्थितियों, उसकी आवश्यकताओं, उसकी आकांक्षाओं से सीधी उठी हुई चीज है। परन्तु इतना अवश्य है कि भाषा के सम्बन्ध में मुझे अपने परिवार और परिवेश से जो संस्कार मिले उसमें अनुदारता और संकीर्णता के लिए कोई जगह नहीं है''[50] बच्चन ने शांत, विमुक्त आवास रहित रहकर 'मधुशाला' की कल्पना की और 'ख़ायाम की मधुशाला' के अनुवाद कार्य ने उन्हें लोकप्रिय बनाया। बच्चन के पिता श्री प्रताप नारायण सदैव ही रामचरित मानस और गीता का पाठ सस्वर करते थे 'इन श्रवण संस्कारों ने''[51] अवधी भाषा और मानस की शैली में गीता को 'जनगीता' का रूप देते समय उन्हें अवश्य सहायता मिली।

अपने छात्र जीवन में बच्चन को पूरा साहित्यिक वातावरण मिला, उन दिनों पंत, विक्रमादित्य सिंह, निराला ने भी उन्हें कविता लिखने

के लिए प्रेरित किया। बी0 ए0 के दिनों में साहित्यिक प्रेरणा सत्यप्रकाश से मिली।

इस प्रकार से बच्चन, हिन्दी के अधीत कवियों की पंक्ति में सबसे आगे है जिन्होंने विश्वविद्यालय से ऊँची से ऊँची डिग्री प्राप्त की।

3.4.1 राष्ट्रीय एकता को महत्तवः—

भारतीय दृष्टिकोण में 'राष्ट्र' शब्द की व्युत्पति 'सर्वधातुम्यः 'स्ट्रन' उणादि प्रत्यय के संयोग से 'रासृ—शब्दें' अथवा के 'राजुशोमेन' धातु से निर्मित है अर्थात् जिस देश के लोग विशिष्ट भाषा द्वारा विचार—विनेयम करत है वह स्थान राष्ट्र है। ''यजुर्वेद में 'राष्ट्र' को देहि' तथा राष्ट्रम्मेदत्त कहा गया है।[52] तथा 'ऐतरेय' ब्राहम्ण में प्रजा को ही राष्ट्र' कहा गया है''[53]

इस प्रकार से स्पष्ट है कि राष्ट्र अनेकता में एकता का प्रतीक है। उसी प्रकार अत्यंत 'अभिवर्धताम् पश्यामि राष्ट्रेण वर्धताम्''[54] द्वारा व्यक्ति, राज्य की समृद्धि और एकता की कामना की गयी है। 'ऋग्वेद' में संयुक्त कुटुम्न की महती भावना में 'राष्ट्रीय एकता' के दर्शन होते है।

''सगंच्छध्वं, सवंदध्वं संबो मानासि जानताम्, देवा भोग यथा पूर्वे सज्जानाना उपासते''[55]

अर्थात्—हम साथ—साथ चले और एक भाषा का प्रयोग करें और मन में सभी के एक ही भाव जागृत हो। वेदों—पुराणों और शास्त्रों में राष्ट्रीय एकता के अर्न्तगत भारत की अखण्ड भौगोलिक एकता, धार्मिक

एकसूत्रता, और सांस्कृतिक गरिमा के दर्शन होते हैं। हिन्दी साहित्य के आरम्भ से ही राष्ट्रीय भावना देखी जा सकती है। विदेशी आक्रमणों के कारण साहित्य में यह भावना और अधिक प्रबल होती है।

बच्चन ने जिस समय साहित्य–जगत में पदार्पण किया, उस समय भारतीय राजनीति हलचल के दौर से गुजर रही थी। सन् 1930 में पूर्ण स्वराज्य की मांग का प्रस्ताव पारित हुआ और 'बापू' की प्रसिद्ध दाड़ीं यात्रा से सविनय अवज्ञा-आंदोलन प्रारम्भ हो गया। 'बच्चन' उस समय बी0 ए0 (प्रीवियस) की परीक्षा में पास हो गए थे। राज्य के लिए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और गाँव–गाँव जाकर राष्ट्रीय एकता पर व्याख्यान देने लगे। जलूसों में गाने के लिए 'राष्ट्रीय गीत' भी लिखें।

''सर जाए पर हिन्द आजादी पाए''[56]

'असहयोग-आन्दोलन' में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा'[57] खद्दर प्रचारक टीम बनाकर खादी का प्रचार–प्रसार करने लगे। उन दिनों 'बच्चन' के मन में 'आर्य समाज' के 'अछूतोद्वार; और 'गाँधी' जी के 'हरिजन आन्दोलन' के संस्कार भी दृढ़ हो चुके थे। उस समय 'बच्चन' ने 'मैथिलीशरण गुप्त' की 'भारत–भारती''[58] 'द्वारिका प्रसाद' का ''असहयोगी फाग''[59] और 'पंत' की कवितायें एवं 'निराला' के मुक्त छंदोंके साथ–साथ 'यंग इण्डिया' 'नवजीवन' पत्रिकाओं का प्रभाव भी उन पर पड़ा।[60]

स्वयं 'बच्चन' के अनुसार–बचपन में पड़े संस्कारों का असर किसी न किसी रूप में जीवन पर पड़ा रहता है और प्रकट भी होता

है। बच्चन छः वर्षो तक युनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर मे रहें और पिछले महायुद्ध के समय हर गर्मी की छुट्टी में रेगुलर ब्रिटिश युनिटों सें सम्बद्ध रहकर आधुनिक हथियारों की चलाने की भी शिक्षा ग्रहण की बच्चन स्वयं कहते हैं।

''मैं कलम और बन्दूक चलाता हूँ दोनों''[61]

3.4.2 बन्धुत्व की भावनाः–

देश की एकता के लिए देशवासियों में आपस में बंधुत्व भी भावना का होना अनिवार्य है इसके लिए व्यक्तियों में आपस में जातियता, ऊँचनीच का भेदभाव, छूआछूत की भावना का नष्ट होना अनिवार्य है। बच्चन ने विभेद की भावना व अस्पृश्यता को देश की प्रगति में घातक माना है। 'गाँधी जी स्वयं छूआछूत के कट्टर विरोधी थे। वे मनुष्य–मनुष्य में किसी तरह का भेदभाव रखना अनुचित ही नहीं हानिकारक भी मानते थे। बच्चन को भेदभाव व छूआछूत की प्रणाली बिल्कुल पसन्द नहीं थी। वह मानते थे कि–

''सब वर्णो के प्रति निष्पक्ष और सबके प्रति निरपेक्ष, एक मात्र व्यवस्था के प्रति निष्ठावान् रखने के लिए उसे किसी वर्ण में स्थान नहीं दिया जाना चाहिए।''[62]

3.5 शक्ति और युद्ध का समर्थनः–

जहाँ गाँधी अहिंसा के पुजारी थे, वहीं बच्चन की रचनाओं में हिंसा और शक्ति का स्वर ध्वनित होता है। वे 'सन्तोष को प्रगति के मार्ग का रोड़ा मानते है और भुजबल की हिमायत करते हुए वे 'निर्बल

के बलराम' न कहकर 'निर्बल के बल है दो धूँसे'[63] ही कहते हैं बच्चन यद्यपि शक्ति प्रयोग में आस्था व्यक्त करते है तथापि उसमें विवेक और मर्यादा सर्वत्र झलकती है। बच्चन आत्मरक्षा, और स्वजनों की रक्षा के लिए लड़ना कभी अनुचित नहीं मानते थे–

चल उठा तलवार! और' स्वीकार कर उसकी चुनौती। न्याय किस्मत और मन की शक्ति का। जो फैसला हो वह खुले मैदान में होने दों।[64]

बच्चन कहते हैं कि वर्षो के तप–त्याग और असंख्य बलिदानों से प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा हमें प्रति–पल, जागरूक रहते हुए करनी चाहिए। हमें केवल शत्रुओं से ही नहीं सावधान रहना चाहिए, कथित मित्रों से भी चौकन्ना रहना चाहिए। इस प्रकार बच्चन स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए शक्ति–परक्ता को आवश्यक मानते है। वह कहते है – ''जब भी मुझे अपने देश की ग्रामीणों की भीड़ देखने का अवसर मिला है मैंने अपने मन में कहा है कि हमारा राष्ट्रीय हथियार तो लाठी ही है।

3.4.4 भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धाः–

प्रत्येंक देश अपनी संस्कृति पर ही जीवित रहता है। संस्कृति की ओर जनता को उन्मुख करने के लिए लेखक प्राचीन इतिहास और संस्कृति को पुनः–पुनः याद करवाते है। बच्चन कहते थे कि प्रत्येंक व्यक्ति को अपनी भारतीय संस्कृति, सभ्यता और जीवन–पद्धति की रक्षा के लिए सजग बनकर जीना होगा। इसें खोकर भारत–भारत नहीं

रहेगा। भारतीयता खोकर भारत के जीने से तो अच्छा है कि वह भारतीयता की रक्षा में अपने प्राणों की बलि चढ़ा दें''[65] बच्चन को भारतीय संस्कृति के प्रति असीम श्रद्धा है। बच्चन ने विदेश में रहते हुए अनुभव किया कि किस तरह दो–सौ वर्षो तक भारतपर राज्य करके भी अंग्रेज भारतीय संस्कृति से अपरिचित है। आज जहाँ हमारे खिलाड़ियों की पहुँच है किन्तु वहाँ भारत का गर्व से सिर ऊँचा करने वाले महापुरूषों की पहुँच नहीं है।

3.4.5 हिन्दी भाषा के प्रति–सम्मानः–

देश की एकता और अंखण्डता को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा का होना अनिवार्य है।

''कि जो समस्त जाति का उभार हो
कि जो समस्त जाति की पुकार हो,
कि जो समस्त जाति की कठंहार हो,
स्वदेश को जबान एक चाहिए।''[66]

प्रारम्भ में बच्चन हिन्दी को राष्ट्र भाषा की अथिकारिणी बनाने के लिए, उसे भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं की 'गंध–ध्वनि' बनाना चाहते थे परन्तु बाद में उनके विचारों में परिवर्तन आने लगता है वे कहते है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में ही भूल थी उसे तो केवल सम्पर्क भाषा ही मानना था। संख्यागत व्यापकता की दृष्टि से ही नहीं, आंतरिक शक्ति और समृद्धि की दृष्टि से भी।''[67]

हिन्दी की राष्ट्रीयता को उन्होंने उत्तरोत्तर व्यापक और उदार होने का प्रयत्न अवश्य किया, पर हिंदुत्व से वह अपने को सर्वथा मुक्त नहीं कर सकी''[68] हिन्दी की संकीर्ण हिंदु राष्ट्रीयता बहुत दिनों तक नहीं चली। 1920 में 'महात्मा गाँधी' भारतीय राष्ट्र मंच पर सर्वप्रमुख नेता के रूप में आये और उनकी प्रेरणा से जो सर्वश्रेष्ठ 'खण्ड काव्य' हिन्दी में लिखा गया वह 'रामनरेश त्रिपाठी' का 'पथिक' था। भारत में अंग्रेज़ी की उपयोगिता को महसूस कर बच्चन ने कहा ''हमारे भाषा–वृक्ष पर वह आकाशबेली बनकर उसका प्राण–रस नहीं चूस सकेंगी। हाँ खाद बनकर वह उसकी जड़ों को कुछ पोषक तत्व देती रह सकती है।''[69]

3.4.6 प्रेम को सर्वोच्य स्थानः–

'प्रेम' शब्द का प्रयोग हमारे प्राचीनतम साहित्य–ऋग्वेंद में नहीं पाया जाता तथापि प्रिय का प्रयोग तीनों लिगों व सभी विभक्तियों में दिखलाई पड़ती है।''[70] पुराण–इतिहास काल, श्रीमद्–भागवत पुराण, व नारद भक्ति, सूत्रादि ग्रन्थों में 'प्रेम' शब्द का प्रयोग स्पष्ट नहीं है।

'प्रेमन्' भाववाचक संत्र शब्द, संस्कृत में नपुंसक लिंग तथा हिन्दी में दोनो लिगों में प्रयुक्त किया जाता है। ''वाचस्पति कोश में इसकी व्युत्पत्ति 'प्रिय' शब्द से की गई है जैसे'–'प्रियस्व भावः इमनिच्प्रत्यय प्रावेशः''[71] प्रेमी–प्रेमिका का प्रेम सबसे अधिक गम्भीर, व्यापक व शक्तिशाली माना जाता है क्योकि इसमे दैहिक, मानसिक, व आत्मिक सम्बन्धों का पूर्ण विकास सम्भव है। ''प्रेम केवल दामपत्य–रति या

मादन–भाव के प्रेम तक ही अपनी गतिविधि सीमित नहीं रखता है, वरन् हृदय के समस्त–भाव क्षेत्र व उनसें सम्बन्धित या प्रेरित सभी जीवन–पथों व कार्य–व्यापारों को भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करता रहता है।''[73]

बच्चन प्रणय–रस की प्राप्ति की तुलना में स्वर्ग को भी ठुकराने से भी नहीं हिचकते है।'' विश्व की सम्पूर्ण सत्ता, बच्चन की दृष्टि में प्रेम भावना से ही सार्थक है वरना यह संसार मरूस्थल जैंसा प्रतीत होता''[74] प्रेम दो हृदयों का, दो आत्माओं का मिलन है। मिलन से ही जीवन पूर्ण होता है।

''गुल और बुलबुल की दास्तान किस वक्त प्रेमी–प्रेमिका के आख्यान में बदल जाए, किस वक्त प्रेम–प्रेमिका की कहानी आत्मा–परमात्मा के बीच प्रणय निवेदन का रूप लेले। वहाँ मदिरा की जो धारा बहती है, देखत-देखते कतरे में सिमट जाती है, कतरा दरिया हो जाता है, दरिया समुन्दर और समुन्दर फिर कतरे में समा जाता है।[75] प्रेम मानवीय सम्बन्धों से अधिक प्रकट होता है।

3.4.7 प्रेम मिलन में उल्लास और उद्दामता में दामपत्य प्रेमः–

प्रेम यदि निर्झर है तो दामपत्य जीवन एक तड़ाग। प्रथम में जहाँ उन्मुक्तता है वही द्वितीय में संयम और सीमा है। सहजता व अत्यन्त स्वाभाविक्ता से, उमड़ते–धुमड़ते हुए भाव को पूर्ण मार्मिकता तथा प्रभुविष्णुता के साथ अभिव्यक्त करने में बच्चन सिद्धहस्त दिखलाई

पड़ते है। बच्चन ने अपनी आत्मकथा में श्यामा जी से सम्बद्ध विछोह और तेजी से सम्बन्धित संयोग पक्ष का वर्णन किया है।

''जैसे–जैसे 'श्यामा' का शरीर शव कर देने वाली रेखा के निकट पहुँचे रहा था, वैसे–वैसे वह तरूढ़ाई मुझसे विदा होती जा रही थी''[76]

इस प्रकार से बच्चन ने अपने प्रथम मिलन की सुधि का अत्यन्त मोहक चित्रण प्रस्तुत किया है। बच्चन ने अपनी प्रेम–भावना को आत्मिक मुक्ति के रस में डूबकर पूर्ण उल्लास के साथ, मधुरता व उज्वलता प्रदान की है।

3.4.8 प्रेम और सौन्दर्य की भावनाः–

सौन्दर्य को प्रेम उत्तेजना देने वाला अनिवार्य अंग है वह आंतरिक भी होता है और बाह्य भी होता है। बच्चन ने चटकीलें व भडकीलें सौन्दर्य का अंकन बडी कलात्मकता से किया है किन्तु सौम्य व सादे रूप–सौन्दर्य की ओर विशेष आकर्षण दिखलाई पड़ता है।

बच्चन ने अपनी आत्मकथा में सौन्दर्य–अंकन के अर्न्तगत प्रत्यंगों की शोभा को दर्शाया है, ''आँखों, पलकों, मेहदी रंजित हथेलियों आदि का सुन्दर वर्णन किया है''[77]

बच्चन को ''हल्के नीले रंग की साडी में ''चम्पा''वृक्षपरी' सी लगती है।[78] हल्कें नीले रंग की साडी में प्रकासों को देख बच्चन को चम्पा का भ्रम हो जाता है।[79] हरे ब्लाउज पर सफेद सारी पहनी''[80] आइरिस के सुनहरे कटे बाल की झटकन से उभरने वाला सौन्दर्य बच्चन की आँखों से छिप नहीं सका है।

तुम्हारे नील–झील से नैन।

नीर–निर्झर से लहरें केश''[81]

इतना ही नहीं फलसाई रंग की सलवार–कमीज और पतली स्याह रंग की चुन्नी में स्वकीया नायिका का सौन्दर्य भी बच्चन ने बड़ी कलात्मकता से प्रस्तुत किया है।''[81]

इस प्रकार से बच्चन ने संयोग श्रंगार के अन्तर्गत सौन्दर्य का अंकन सर्वोधिक उत्साह व मनोयोग के साथ किया है।

3.4.9 बच्चन–साहित्य में विरह–वेदना– का समावेशः–

जीवन में उदारता, दया, ममता, सहानुभूति आदि उज्जवल गुणों का विकास प्रायः विरहावस्था में ही होता है। महाकवि कालिदास तो विहर में ही सच्चा प्रेम मानते है–

ए तस्मान्मा कुशीलनमभिज्ञानदानाद्धिदित्वा

मा कौलीनाच्यकितनयने मयुयविश्वासिनीमू

स्नेहानाहूः किमापि बिरहे ध्वंसिनस्त त्वभोगा

विक्ष्टे वस्तुत्युपचितरसा प्रेमराशीभवन्ति[82]

हिन्दी साहित्य में पंत'[83] महादेवी वर्मा'[84] आदिने विरह की महत्व को दर्शाया है। बच्चन के गीत विरह के करूण–मधुर प्रसंगों से भरे हुए है जो प्रतीक्षा की उत्सुकता, विरह की तड़पन स्मृति की तीव्रता और हृदय का हाहाकार विरह समस्त कार्य–व्यापार के साथ अभिव्यक्त है।

श्यामा देवी की मृत्यु के बाद लेखक की वृत्तियाँ जीवन की नश्वरता पर प्रहार करने लगती है। विरह में व्यक्ति आत्म–निरीक्षण, आत्म–शोधन, प्रायश्चित द्वारा स्वयंके चरित्र में मौन परिष्कार करता है। चारित्रिक सुधार जितना प्रीति द्वारा संभव है उतना अन्य किसी माध्यम से नही।

विरहावस्था में सहज द्रवणशील मन में से स्वार्थ–प्रियता, अनुदारता आदि अब गुणों का क्रमशः उपशमन होता है फलतः व्यक्ति नये बल से प्रेम की उज्जवलता का अनुभव कर प्रिय के साथ सहृदय सरस होने का दृढ़ संकल्प करता है।

बच्चन के जीवन में विरह–वेदना का विशिष्ट स्थान है। बच्चन जीवन में अंह के शमन के लिए विरह को आवश्यक मानते है। अंह के टूटे बिना एक हृदय से दूसरे हृदय तक पहुँचना कठिन है। स्वयं बच्चन के अनुसार ''वेदन के बिना मनुष्य का अंह नहीं टूटता और अंह के टूटे बिना एक मनुष्य के हृदय से दूसरे मनुष्य के हृदय तक पहुँच नहीं होती, अर्थात् सेतु नहीं बनता।

'' हृदय– हृदय के बीच भावनाओं के सेतु का निर्माण किए बगैर जो शब्दों का कारवाँ खा करते है उनका कारवाँ कागजों के मरूस्थल में खो जाए या निर्थक ध्वनि बनकर शून्य में विलीन हो जाते है।

बच्चन–साहित्य में जीवन–संधर्षः–

सन् 1929 के आर्थिक विस्फोट 1930–32 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन की असफलता तथा बेरोजगारी और गरीबी की समस्याओं ने

जीने की समस्या बना डाला। असफलता, कुंठा और नियतिबद्धता की भावना ने संवेदनशील भारतीय चेतना को आलोड़ित–विलोड़ित कर दिया। फलतः झूठी मादकता, स्थायी जीवन–मूल्यों के प्रति विद्रोह, अनास्थामूलक चेतना मध्यम वर्ग की नई आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्ति–स्वातंत्रता एवं मानवीय क्षमताओं के प्रति अदम्य विश्वास को लेकर विभिन्न प्रतिक्रियाएँ होने लगी जिसका प्रभाव साहित्य पर भी पडने लगा।

सामाजिक और आर्थिक–वैषम्य के क्रोड़ मे बच्चन का विकास हुआ। उसमें स्वाभाविक रूप से विद्रोह का उत्स फूटता हुआ दिखाई देता है। "बच्चन के अधिकांश काव्य–पट में उसकी आत्मकथा के ही बिखरे पन्ने मिलते हैं। जिसमें सम्भवतः घटनाएँ तो अपने स्थूल–यथार्थ के प्रच्छन्न हो गई है किन्तु तज्जनित संघर्ष ऊहापोह, घात–प्रतिघात तथा सुख–दुःख के संवेदनों के मधु–रिक्त रस का स्वाद पाठकों के हृदय को स्पर्श कर उनकी साँसों में बहने लगता है और कुछ समय के लिए अनुभूति का अंग बन जाता है।"[86]

बच्चन निराश भरे रास्ते पर भी प्रतिक्षण आगे बढ़ते रहना चाहते हैं स्वयं बच्चन के शब्दों में ऋषियों की अमरवाणी अब भी गुँजती है, 'तमसो माँ ज्योति गमय, असतोमाँ सद्गमय, मृत्यों माअमृतोगमय",। अधड़ और आँधियों ने मुझें बहुत झिंझोड़ा बहुत तोड़ा था, पर वे मुझे झुका नहीं सकी थी, मेरे अन्दर कहीं इस्पात की ऐसी शलाका थी जो

मुड नहीं सकती थी, इसीने मुझे संभाला, सुस्थिर रखा, बचाया जलाया'।[87]

बच्चन ने संसार में विरोध करने का प्रथम शस्त्र–उपहास, व्यंग्य अपनाया, जो हँसकर उड़ाया जा सके इसके विरोध में अंधड–तूफान क्यों उठाया जाए—

''जो गुड पीन्हें ते मरै माहूर देहु न ताहि'।[88]

बच्चन ने दूसरा हथियार अपनाया– लेखनी और लब्ज का शुरू–शुरू में इन आक्रमणों से बच्चन के मन को बडी चोट लगती थी, परन्तु फिर भी वह जीवन–पथ पर आगे ही बढ़ते गए। ''स्वतन्त्र भारत के भाल तट पर इस चिरतरूण लेखक ने अपनी वज्र लेखनी से जो स्वर्ण लेख दिया है। वह काल–वैसाखी के दुर्विनीति झोंकों से धूमिल नहीं हो सकेगा'।[89]

जीवन–संघर्षो से जूझते हुए बच्चन इंग्लैड गए किन्तु दुनिया के कुछ औछे व्यक्तियों ने उनको वहाँ भी मानसिक कष्ट पहुँचाया। ''बच्चन के एक मित्र ने लन्दन में बातचीत के सिलसिले में कुछ ऐसी बातों की ओर संकेत किया जो कानो–जुबानों से होती बड़ी विकृत रूप में उन तक पहुँची थी—''[90]

मेरा दोस्त कर रहा है आघात!

मेरी पीठ–पीछे मुझ पर प्रहार!![91]

3.4.10 कुंठा का वर्णनः–

बच्चन जी निंदा और स्तुति से बेखबर होकर आगे ही बढ़ते रहना चाहते थे। जब बच्चन पर किसी मुसलमान लडकी के प्रेम में पड़ने का आरोप लगाया गया और कहा गया कि वह उस लड़की से इंग्लैड में शादी करना चाहते है इसलिए वह बीवी बच्चों को छोड़कर चले गए और उनका अब भारत लौटने का इरादा नही है।[91] पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी ने बच्चन पर वासना का आरोप लगाया प्रतिक्रिया स्वरूप बच्चन ने 'कवि की वासना छपवाई जिसमें बच्चन ने कहा–

''वासना जब तीव्रतम थी। बन गया संयमी मैं,
है रही मेरी क्षुधा ही। सर्वदा' आहार मेरा'।''[92]

'इन पक्तियों मं फ्रायड का कुंठावाद बोल रहा था''[93] बच्चन का हालावाद इन्हीं प्रणयमूलक भावनाओं का उद्‌गार मात्र था जो एक विप्लव के रूप में फुट पड़ा। ''बच्चन ने विस्तारपूर्वक अपनी वासना का वर्णन किया, जो किसी भी आदर्श कवि के लक्ष्य ही सिद्ध करता है। बच्चन को इसमें कल्पना का सहारा लेना ही पड़ता है।''[94]

बच्चन संसार में जय–पराजय की चिंता, रास्ते की थकावट संसार की उपेक्षा और अपशकुन की परवाह किए बिना निरन्तर आगे बढ़ते रहते थे। ऐसे मजबूत ह्रदय वाले बच्चन दुःख से कभी मुँह नहीं मोड़ते। वह तो सुख–दुःख दोनों में ही आगे बढ़ते रहते थे।

3.4.11 बच्चन–साहित्य में मानवीय संवेदनाः–

काल्पनिक देवताओं व स्वर्गिक जीवन की तुलना में मानव और मानव जीवन का आधुनिक गौरव–स्थापन विचार–जगत की एक विराट क्रांति का परिणाम है। जो बच्चन साहित्य में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। वस्तुतः इस मानववाद का अभ्यास भारत देश अत्यंत प्राचीन–काल में सफलतापूर्वक सम्पन्न कर चुका है। सर्वेभिवन्तु सुखिनः तथा न भानुषात श्रेष्ठतर हिं किं चित यह उस अभ्यास के प्रकाश स्तंभ है किन्तु राजनीतिक, सामाजिक, व धार्मिक कारणों से मानववाद की ज्योति कलान्तर में मन्द पड़ गयी।

पृथ्वी पर मानव ही सब कुछ है और वह वस्तुओं की अन्तिम नाप है। पृथ्वी पर मानव से बढ़कर कोई नहीं है। मनुष्य स्वरूप और गुणों में जैसा है उसी रूप में रहकर वह अपना कल्याण करता है। संसार में मानव–प्रेम विश्व–प्रेम अथवा ईश्वर–प्रेम का ही पयर्यि कहा जा सकता है। इस युग में काल्पनिक ईश्वर की सेवा की अपेक्षा व्यक्त जीवित मानव की सेवा और उसका प्रेम ही सर्वोच्च स्थान रखता है स्वयं बच्चन के अनुसार– ''मानव की उपेक्षा कर कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया जा सकता है।''[95] बच्चन का दृष्टिकोण मानवतावादी'' ईसा और गाँधी को वह मानवता के शिक्षाक मानते है जब तक वह मानवता से प्रभावित नहीं होगा, तब तक उसका विकास भी नहीं होगा।

अतः बच्चन जी का मानवतावादी दृष्टिकोण बहुत उदार है वह लिखते है कि ''सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास में जड़–रूढ़ियों से

अधिक महत्व मनुष्य को दिया जाना चाहिए।''[96] संसार में मानवताके विकास के लिए मनुष्य की प्रगति के लिए आधुनिक विज्ञान को मानवता की सेवा में तो लगाया है, पर बहुत स्थानों पर वह भी विज्ञान की सेवा में लग गया। उसका–दास हो गया। या इस प्रकार से भी कह सकते है कि विज्ञान मानवता के उपर सवार होगा तो वह दैत्य होगा, और मानव–विज्ञानपर सवार होगा तो देवता।''[97] अतः बच्चन जागरूक विचारक एवं प्रतिभावन कलाकार है वह राजनीतिक वातावरण के प्रत्यक्ष सत्य से आँख नहीं मुँदते ''केन्द्रिय सरकार के बड़े–बडे दफ्तरों से लेकर पार्लियामेंट तक का अनुभव बच्चन को है।''[98] जीवन से सम्बद्व कोई नीति रचनाकार की सीमाके बाहर नहीं। राजनीति के मूल्य सीमित और समय सापेक्ष है जबकि रचना के मूल्य जीवन–मूल्यों के पर्याय है। किसी समय में यदि राजनीति जीवन–मूल्यों को नकार दे तो रचनाकार को निश्चय उसका विरोध करना, उससे लड़ना अनिवार्य हो जाएगा। ''रचनाकार को हर हालत में जीवन–मूल्यों का पोषण करना होता है।''[99]

3.5 बच्चन जी की भाषा का मूल्यांकनः–

बच्चन की लोकप्रियता और सफलता का बहुत बड़ा श्रेय उनकी सहज सीधी भाषा की शैली को है जो अनेक से अनेक जटिल संवेदनाओं को भी बिल्कुल सीधे और साफ अकृत्रिम भाषा के रूप में अत्यन्त ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में समर्थ है।''[100] बच्चन की भाषा में एक साथ ही स्वाभाविकता, ऋतुजा, प्रवाहता और मौलिकता

विधमान है। बच्चन की भाषा गुप्त पंत, निराला, महादेवी, आदि अनेक लेखकों से भिन्न है। ''बच्चन की भाषा न तो रहस्यवादियों की संस्कृत बाहुल्य भाषा है और न ही प्रगतिवादियों की कठोर, शुष्क, पदावली युक्त, नीरस, भाषा ही है। ''बच्चन की भाषा सर्वग्राहा, गेय, सरस, सरल, शब्दावली, प्रधान कोमल है।''[101] सच तो यह है कि शुरू से ही बच्चन का अपना भाषा स्कूल था।''[102]

बच्चन भाषा के सभी कृत्रिम, नियमों, आदेशों, व औपचारिकताओं की उपेक्षा करके अपने अन्तःकरण को तृप्ति का मानदण्ड बनाकर चले है। बच्चन ने अनुभूति और प्रेरणा के अतिरिक्त अन्य सभी से आँखे फेर ली है और मन खींच लिया है इसलिए भाषा का विशेषिकरण हुआ। बच्चन ने स्वयं व्यक्त किया है कि रचना करते समय भाव–विचारों की अभिव्यक्ति ही मेरा ध्वेय होता है, शब्दों अभिव्यंजना के नयें प्रयोगों के लिए कुछ लिखना मुझे अस्वाभाविक लगता है।''

यही कारण है कि बच्चन जीवन के कठोर से कठोर सत्यों और उलझो विचारों को तनिक भी जटिल और दुहरू हुए बिना बिल्कुल साफ–सीधे ढंग से व्यक्त कर देना उनकी अपनी महत्वपूर्ण विशेषता और उपलब्धि है।

बच्चन भाषा–शिल्प के अत्यन्त कुशल–चितेंरे और सम्पन्न कलाकार है। प्रत्येंक अवसर और विषय के अनुकूल समर्थ और सशक्त भाषाशैली का प्रयोग करना उनकी विशेषता है। कथा शिल्प के विषय में बच्चन ने अपनी भाषा में सजगता तथा स्मृतिचिन्हों के दर्शन से

स्मृतियों के सहसा जाग्रत होने की बात उपमाओं की माला सहित इस प्रकार प्रस्तुत की है—

"जीरों रोड से आते–जाते अक्सर मेरी दृष्टि देवी मंदिर और शिवाले पर पड़ी है और उपर्युक्त बिजली के खंभे पर भी, और वहाँ मैं थोडी देर को ठहर गया हूँ। मेरे बचपन से मेरे यौवन तक का सारा इतिहास मेरी आँखों के सामने से सर्प जैसा गुजर गया है, जैसे–सडक पर जाती हुई कोई तेज मोटर या जैसी किसी लम्बी तस्वीर की पूरी रील, दो–चार मिन्टों में बड़ी तेजी के साथ परदे पर से गुजर जाती है।"[103]

बच्चन ने यदावसर अंलकारों, प्रतीक, बिम्बों, मिथकों तथा काव्य–रूढ़ियों का प्रयोग आत्मकथा में किया है। वे निश्चय ही श्रेष्ठ भाषाविद्र है। शब्दों पर उनकी पकड़ प्रबल है। विशेषणों का प्रयोग कहीं अधिक है और न कहीं कम है।

3.6.2 सूक्तियों और मुहावरों का प्रयोगः–

बच्चन अपनी भाषा में अंग्रेज़ी संस्कृत की सूक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी समान अधिकार से करते है—

"पुरखो के परिवार में राधा, उसकीपुत्री महारानी और दोहती बुद्वी विधवा जीवन यापित कर रही थी। भोलानाथ की पुत्री तुलसी के जन्म के बाद जो पारिवारिक ईर्ष्या ने जन्म लिया उसका चित्रण बच्चन ने सूक्ति में इस प्रकार से किया–

''तुलंसा और बुद्धी को लेकर ईर्ष्या चलती, दादी और महारानी में मनमुटाव रहता, राधा कभी पेट की ओर झुकती, कभी पीठ की ओर''[104] इस प्रकार बच्चन में साधारण उक्तियों को सूक्ति बन देने की शक्ति और बीच–बीच में मुहावरों का छोंक लगाने की प्रवृत्ति अपने आप में मनोहारित की सृष्टि है। बच्चन की भाषा एक साथ सुललित लेाक–भाषा और संस्कृत–निष्ठ परिनिष्ठित भाषा के संगम को प्रस्तुत करती है। कथा कहने के लिए बच्चन·ने लोक प्रचलित सरल शैली और साहित्यिक व दार्शनिक विवेचन के स्थलों में प्रायः संस्कृतनिष्ठ शैली का उदाहरण ग्रहण किया है।

3.6.3 प्रणयानुभूतिः–

प्रणयानभूति, प्रणय–निवेदन आदि प्रसंगों में उनकी भाषा तार्किकता और संवेदनात्मकता के कोमल स्तरों को छूने वाली बन जाती है। कर्कल और चम्पा प्रसंग में बच्चन की भाषा अतिरिक्त रूप से स्वछन्द और सहजता के निकट पहुँच जाती है। एकाध स्थल पर तो उसे अवांछनीय भी कहा जा सकता है। उदाहरण'' जैसे कभी वह मुझे झुककर मेरा सिर छाती पर धर लेती है, और मेरे बालों में चलती उँगलियों धीरे–धीरे निस्पंद हो जाती है और मुझे लगता है कि मैं किसी में डूब रहा हूँ, शायद ही कोई विश्वास करेगा, छः महीनों में न वह कुछ बोली और न मैं कुछ बोला''[105]

बच्चन ने हिन्दी व संस्कृत के अतिरिक्त उर्दू, फारसी व आँचलिक शब्दावली का प्रयोग भी मुक्त भाव से किया है।

3.6.4 उर्दू–शब्द–भण्डरः–

बच्चन ने अपनी भाषा में अरबी–फारसी शब्दो का प्रयोग न आग्रह पूर्वक ही किया, और न ही इन शब्दों को प्रधानता ही दी है। बच्चन का मानना था, ''उर्दू को जानने से हिन्दी को लाभ होगा।''[106] उन्होंने ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उनके बाबा भोलानाथ, ऊर्दू, फारसी और अरबी पढ़े थे। रामचरित मानस का सुन्दर काण्ड भी उनके हाथ का 'ऊर्दू' में लिखा था।' बच्चन ननिहाल में कुल–परम्परा से प्राप्त उर्दू–अक्षरों में लिखा रातचरित मानस प्राप्त कर आभार व्यक्त करते हैं:–

''मानस शोध के सम्बन्ध में यह पुस्तक बड़े महत्व की सिद्ध हो सकती है। कभी–कभी मुझे खेद होता है कि मैं उर्दू नहीं जानता, नहीं तो मैं स्वयं प्रचलित मूलपाठ से इसकी तुलना करता।''[107] कुछ उदाहरण इस प्रकार से है। हाजिरी, खूब, तारीख, लाजिमी, नजूमी, किताब, अरमान, हाला, बाकी, काबिल, मशहूर, सही–गलत, तरीका (उर्दू–फारसी) लद्दड़ अल्ल, छीमियाँ, लस्टम,–पस्टम, गिरिस्ती, मेहरारू, सायत, गुरिया, होरहा, विनती, –चिरौरी, बसनी, झँपना, झौकरा (देशज) आदि शब्द का प्रयोग बच्चन ने अपनी भाषा को सरल, और सुबोध बानाने के लिए किया। ये शब्द उर्दू के होते हुए भी हिन्दी परिवार का अभिन्न अंग लगते है।

3.6.5 अंग्रेज़ी शब्द भण्डारः–

दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले लैम्प, करेन्ट, रकीम, रिजेक्ट जैसे अंग्रेज़ी के शब्दों को भी बच्चन ने अपनी भाषा में सहजता से ग्रहण किया है, यद्यपि बच्चन पत्र का सिरनामा भी अंग्रेज़ी में पसन्द नहीं करते थे किन्तु बाद में स्वानुभव से जाना कि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की उपेक्षा करना श्रेयस्कर नहीं है। बच्चन जी के मतानुसार अंग्रेज़ी एक बहुत बड़े वर्ग की सम्पर्क भाषा है, और आगे भी रहेगी– इसे अपदस्थ करना न संभव है और न लाभकर, इस सत्य से वह धीरे–धीरे अवगत हुए।

3.6.6 लोक–कथाओं और लोकोक्तियों का प्रयोगः–

बच्चन ने कायस्थ वर्ण के उद्भव तथा गुणावगुण की अत्यन्त आकर्षक और चामत्कारिक कथाएँ लिखकर आत्मकथा में स्पष्ट किया। उन्होंने तर्क–शिल्प का सहारा लेकर स्पष्ट किया है ''पुराण इतिहास, लोक कथाओं और लोकक्तियों में जिस रूप में चित्रित किया गया ''मैं उन्हीं का वंशधर हूँ।''[108] उन्होंने ने अपनी जन्मकथा लिखते हुए हरिवंश पुराण, मानसपाठ के सात–आठ पृष्ठों में हरिवंश पुराण की विस्तृत व्याख्या कर डाली हैं। बच्चन की भाषा में विविध शैलियों के दर्शन होते हें भविष्य–वाणी और धार्मिक गुरूओं के आशीर्वादों के प्रसंग में ऐतिहासिक तथ्यों के प्रसंग में, वर्णनात्मक शैली, सामाजिक परम्पराओं की शैली में विश्लेषणात्मक शैली, पुरखों के वर्णन में कथात्मक शैली, सिद्धांत कथन में समीक्षात्मक शैली के अत्यन्त सुन्दर

उदाहरण देखने को मिलते है। इसके अतिरिक्त अनेक स्थलों पर पत्रों की रूपरेखाओं का वर्णन करने में विवरणात्मक शैली और कभी–कभार मनोरंजक और विनोदपूर्ण शैली के अत्यन्त सुन्दर उदाहरण देखने को मिलते है।

निःसंकोच रूप में कहा जा सकता है कि बच्चन की भाषा शैली एक ऐसे स्वर्णभूषण के समान है जिसमें विविधवणी, हीरे–मोती, मूँगे, नीलम आदि सुन्दर रीति से जड़े हुए है।

संदर्भ :–

1. जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन, व्यक्तित्व और कृतित्व पृ0–7, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली,–1
2. बॉकेबिहारी भटनगर : बच्चन, व्यक्ति और कवि पृ0–6, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. बॉकेबिहारी भटनगर : 'सं0 सुमित्रानन्दन पंत, बच्चन व्यक्ति और कवि पृ0–45–46, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. सं0 प्रो0 दीनानाथ शरण : लोकप्रिय बच्चन, प्रथम सं0–1967 पृ0–30, साहित्य निकेतन, कानपुर।
5. वही : पृ0 – 32
6. वही : पृ0 – 32
7. बच्चन : धार के इधर–उधर (इन्सान की भूल) पृ0–24 राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
8. बच्चन : त्रिभंगिमा, पृ0 – 186, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
9. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–128, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
10. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–255, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।
11. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0 165, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

12. बच्चन : नये पुराने झरोखे, पृ0 259, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

13. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–73, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

14. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–82, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

15. जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन व्यक्तित्व और कृतित्व पृ0–213 सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली।

16. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0–221, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

17. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–41, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

18. वही : पृ0–29

19. बच्चन : मिलन–यामिनी, पृ0–30, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

20. डॉ0 आशा किशोर : आधुनिक हिन्दी गीति काव्य का स्वर्ण और विकास, पृ0–232, वाराणसी विश्वविद्यालय – 1971

21. जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ0–11 सन्यमार्ग प्रकाशन, दिल्ली।

22. बाँकेबिहारी भटनागर : बच्चन : व्यक्ति और कवि, पृ0–53, हिन्दी भवन, नई दिल्ली से निर्मित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जवाहरनगर, दिल्ली–6

23. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–70, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

24. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–228, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

25. वही : पृ0 – 230

26. वही : पृ0 – 96

27. बच्चन : नये–पुराने झरोखे, पृ0–77, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

28. धर्मयुग (पूर्नमुद्रित) सुधाबहन पटेल : ब्च्चनः व्यक्ति और कवि जवाहर पुस्तकालय सदर बाजार मथुरा।

29. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–12, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

30. वही : पृ0 – 13

31. बच्चन : मधुशाला (परिशिष्ठ), पृ0–107, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

32. बच्चन : मधुशाला, पृ0–107, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

33. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–23, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

34. वही : पृ0 – 26

35. वही : पृ0 – 42

36. योगेन्द्र दत्त शर्मा : आजकल, पृ0–19 सन्, जून–2003, अक्षर प्रकाशन पटियाला हाउस, दिल्ली।

37. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–42, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

38. बच्चन : वही, पृ0 – 79

39. बच्चन : आरती और अंगारे, पृ0–179, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

40. वही : पृ0 – 100

41. वही : पृ0 – 99

42. योगेन्द्र दत्त शर्मा : आजकल, जून–2003, पृ0–21, अक्षर प्रकाशन पटियाला, दिल्ली।

43. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–192, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

44. बच्चन : बुद्ध और नाचघर, पृ0–11, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

45. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–192, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

46. बॉकेबिहारी भटनागर : व्यक्तित्व और कवि, पृ0–76, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

47. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–269, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

48. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–36, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

49. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0–310, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

50. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–148, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

51. बच्चन : क्या. भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–148, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

52. सं0 श्रीदा सातवलेकर : 'यर्जुर्वेद' (संहिता) दशम अध्याय, 2/3 इत्यादि पृ0–34, विक्रम संवत–2003, स्वाध्याय मण्डल औधर।

53. शतपथ ब्राहम्ण : 6/7/3/7/ स्वाध्याय मंडल, औधर।

54. ऐतरेय ब्राहम्ण : अध्याय–40 एण्ड 3/26 स्वाध्याय मंडल औधर

55. श्रीवाद सातवलेकर : अथर्वेद संहिता 6/78/2 पृ0–131, स्वाध्याय मण्डल पारड़ी (जिला बलसाड़)

56. ऋग्वेद : 10/141/2 स्वाध्याय मण्डल पारड़ी (जिला बलसाड़)

57. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–263, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

58. डॉ0 नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0–567, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

59. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–153, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

60. उपरोक्त : पृ0 – 193

61. उपरोक्त : पृ0 – 45

62. बच्चन : बंगाल का काल, पृ0–41, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

63. बच्चन : पृ0–41, राजपाल एण्ड संस दिल्ली

64. बच्चन : बुद्ध और नाचघर, पृ0–92, राजपाल एण्ड संस दिल्ली।

65. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–112, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

66. बच्चन : धार के इधर–उधर, पृ0–66, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

67. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–164 राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

68. बच्चन : नये–पुराने झरोखा, पृ0–119, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

69. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–112, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

70. ऋग्वेद संहिता : (वैदिक संशोधन मण्डल पूना), सूची खण्ड (जिल–5) पृ0–397–398

71. वचस्पत्यम कोच : पृ0–4540, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, सन् 1962, वाराणसी।

72. डा0 रामेश्वरलाल खंण्डेलवाल : आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम–और सौन्दर्य, पृ0–117, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

73. बच्चन : मिलन–यामिनी, पृ0–174, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

74. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–58, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

75. वही : पृ0 – 217

76. वही : पृ0 – 212

77. वही : पृ0 – 228

78 वही : पृ0 – 278

79. बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ0–189,राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

80. वही : पृ0 – 189

81. वही : पृ0 – 233

82. कामलेश्वर सिंह : कालिदास मेधदूत, उत्तरमेघ पृ9–55, संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा।

83. सुमित्रानन्दन पंत : पल्लव, षष्ट्म संस्करण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

84. महादेवी वर्मा : ग्रन्थि, सन्–1972 (भारतीय प्रकाशन) भारती भण्डर इलाहाबाद।

85. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–260, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

86. बच्चन : अभिनव सोपान, पृ0–70, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

87. बच्चन : सतरंगिनी, भूमिका, पृ0–12, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

88. बच्चन : कवियों में सौम्य–संत, पृ0–173, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

89. डॉ0 रामरत्न भटनागर : साहित्य–सन्देश, नव0, दिस0–1967, पृ0–203, साहित्य कुंज आगरा।

90. बच्चन : प्रवास की डायरी 241, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

91. वही : पृ0 – 412

92. बच्चन : मधुकलश, पृ0–11, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

93. राजनाथ शर्मा : साहित्य निबंध।

94. प्रो0 दशरथराय : हालावाद और बच्चन, पृ0–62, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रकाशन।

95. राजानन्द : बच्चन साहित्य संदेश बच्चन विशेषांक नव0, दिस0 1947, पृ0–231, साहित्य कुंज आगरा।

96. वही : पृ0 – 194, नव0 दिस0

97. बच्चन : टुटी–छूटी कडियॉ, पृ0– 160, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

98. डॉ0 श्यामसुन्दर धोष : बच्चन का परवर्तीकाव्य, पृ0–71, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

99. बच्चन : टूटी–छूटी कडियाँ, पृ0–154, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

100. डॉ0 रामकुमार सिंह : आधुनिक हिन्दी काव्य भाषा, पृ0–790, कानपुर ग्रन्थम, सन् 1965

101 गोपालदास नीरज, सुरेश कुमार : बच्चन याती अग्निपथ का, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, फेज–2, नई दिल्ली।

102. सत्यनारायण श्रीवास्तव : सहित्यार्चन 'ज्ञानोदय' सित0 1960, पृ0–132, भारतीय ज्ञानपीठ कलकत्ता।

103. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–1 राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

104. वही : 212

105. वही : 119

106. बच्चन : प्रवास की डायरी

107. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

108. बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूँ, पृ0–182 राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।